P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

त्रिलोचन के काव्य की सृजनशीलता

मंजुला शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
टी.डी.बी. कॉलेज
रानीगंज

सारांश

साहित्य अपने युग की व्यंजना करता है। यही नहीं वह उसमें भविष्य के लिए अपार सम्भावनाओं की तलाश को भी लिये रहता है। व्यक्ति से आरम्भ करके समाज, राष्ट्र और विश्व की परिकल्पना इसमें समाहित रहती है। रचनाकार अपने युग की विभिन्न परिस्थितियों राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि से संघर्ष की चेतना को उद्‌बुद्ध करता है काव्य अपने आदि से अन्त तक 'जनहित' की भावना को संजोये हुए चलता है और प्रगतिशील साहित्य जनहित की रक्षा और विकास के लिए संघर्ष का जोरदार समर्थन करता है। यह वह साहित्य है जो समाज को आगे बढ़ाता है, मनुष्य के विकास में सहायक होता है। पूँजीपतियों और सामन्तों के शोषण की काट यहॉ निहित है। कवि त्रिलोचन धरती के अनुपम गायक है। नवीन सामाजिक चेतना के साथ सामाजिक वैषम्य की विवेचना वे करते है। अपने समकालीन कवियो नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल गजानन माधव मुक्तिबोध, डॉ रामविलास शर्मा और शिव मंगल सिंह 'सुमन' में वे विशेष स्थान रखते हैं। 'धरती' से लेकर गुलाब और बुलबुल, दिगंत, शब्द, ताप के ताए हुए दिन, अरघान, जीने की कला, फूल नाम है एक' आदि सभी में नवनिर्माण की माँग की गयी है।

मुख्य शब्द : काव्य, चेतना, जीवन–संग्राम, समाज, नवसृजन।

प्रस्तावना

मनुष्य जाति अपने संग्राम की क्षमता से विकसित होती है। उसकी चेतना के आधार में संवेदना छिपी रहती है। साहित्य में बड़ी सावधानी और सहजता से इसे प्रस्तुत किया जाता है। साहित्यकार युग परिवर्तन के साथ नये मूल्यों की स्थापना करता है। वह समाज की विद्रूपता का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हुए उसमें से नये बीज का आह्वान करता है। नव सृजन की भूमि रचता है।

प्रगतिशील कवि त्रिलोचन की कविता जीवन–संग्राम की कथा कहती है। कवि मानव–समाज का एक सजग एवं संवेदनशील प्राणी होता हैं जिसकी रचनायें सम्पूर्ण युग को व्यक्त करती हैं। श्री चन्द्रबली सिंह के अनुसार ''त्रिलोचन शास्त्री ने अपनी 'कविताओं में स्वानुभूत जीवन रूपान्तरित किया है। अवध के गाँव में पैदा होने वाले इस कवि ने बचपन में ही जीवन की विषमताओं को नजदीक से जाना है। उसने गाँव की जनता के लिए शिक्षा और संस्कृति के द्वारा बन्द देखे । किशोरावस्था में ही उसे स्वयं अपनी शिक्षा को बीच में ही समाप्त कर देना पड़ा। युवावस्था में बहुत दिनों तक उसने दर–दर की ठोकरें खाईं।.....बुरे दिनों से वह टूटा नहीं..... उसने गरीबी और अन्धविश्वास के बीच मरती–जीती जनता की मानवता को पहचाना और गॉवों से दूर रहते हुए भी उसने उस मानवता को एक अक्षय प्रेरणा के रूप में अपने हृदय में संजोयां [1]''वहीं'' डॉ0 रामविलास शर्मा कविवर त्रिलोचन की अनुभूति के सन्दर्भ में कहते हैं ''भूख उपवास और बेरोजगारी पर जैसी अनुभूर्ति–तीव्रता त्रिलोचन की कविताओं में है वैसी अन्य किसी प्रगतिशील कवि में नहीं है।''[2] कवि त्रिलोचन अपने जीवन के कठोर–सत्य के साथ–साथ मानव–जीवन की जटिलता को जीवन–संघर्ष के आलोक में चित्रित करते हैं। त्रिलोचन के संदर्भ में गोविन्द प्रसाद का यह वक्तव्य चरितार्थ है– 'त्रिलोचन की कविता गहरे अर्थों में मानवीय चरित्र के उन्नयन की कविता है। उसकी दृष्टि में मात्र सफलता कोई मूल्य नहीं है। हाँ, ईमानदारी और नैतिकता के दृढ़ संकल्प को उनकी कविता एक कसौटी के रूप में हमेशा देखती रही है। यही कारण है कि ये कवितायें (अपने लिए) एक खास तरह का पाठक चाहती हैं जिसके अपने संस्कार और चरित्र अथवा प्रकृति में इन कविताओं की सी कठोरता और सरलता एक साथ हो। एक खुली हुए धूप का–सा मिजाज और विवेकवान ग्रन्थ का सा प्रवाह, भीतर ही भीतर बहती हुई नदी के दुःख का आवेग और धैर्य। .....यह कविता एक संस्कारवान पाठक की माँग करती है। उस ऊँचाई का ग्राहक उसे न मिला तो अर्थ के सतही स्तर को वह बेशक हस्तगत कर ले परन्तु उसके मर्म को छू पाना कदाचित ही संभव हो।''[3]

त्रिलोचन की कवितायें स्वतंत्रता पूर्व (1935–1947), स्वतंत्रता के बाद (1947–1962) और फिर (1963–2007), तक आती है। कवि अपनी आरम्भिक कविता 'धरती' से नव निर्माण का आह्वान करते हैं–

अब तक जो होता आया है
उसमें जन–सम्मान नहीं है

उसमें मानव को मानव के
सुख–दुख का कुछ ध्यान नहीं है
उससे व्यक्तिवाद पनपा है
उससे पूँजीवाद हुआ है
इन्हें नष्ट कर शोषित मानव,
शप काट दो जग–जीवन का
x x x x x x x x x x x x
अब कुछ ऐसी हवा चली है
जिससे सुप्त जगत जागा है
जिससे कंपित जीर्ण जगत ने
आज भरण पर माँगा है।
नव निर्माण करों तुम जग का,
जीवन का, समाज का, मन का
आज पुरानी निर्बलता की
जगह शक्ति नूतन बैठाएँ।[4] (धरती)

त्रिलोचन धरती की कथा कहते हुए मानवता को विविध पीड़ाओं से मुक्ति दिलाने के इच्छुक हैं। रेवतीरमण के अनुसार ''धरती त्रिलोचन की कविता की तो धरती है ही, प्रगतिशील काव्यांदोलन की भी धरती है। इसमें त्रिलोचन ही नहीं, प्रगतिवादी काव्य की भी समस्त प्रवृत्तियाँ सहज ही उपलब्ध हैं। यह उनकी संवेदना और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करनेवाली कविता–पुस्तक है। यह कवि की पहली कृति है, अंतिम नहीं। हिन्दी के किसी अन्य कवि की पहली कृति में ज्ञान और संवेदना की ऐसी परिपक्वता नहीं मिलती है।[5]''

कवि माँ भारती की स्वतंत्रता चाहते हैं। परतंत्रता के उत्पीड़न, क्रूर शासकों के विभिन्न अमानवीय यातनाओं, पूँजीपतियों, जमींदारों का बोलबाला, अशिक्षा, असमानता, जाति–पाँति के भेद–भाव को वे पुरूषार्थ के बल पर विजय प्राप्त करना चाहते हैः–

''तू अपने पौरूष का करतब
पराधीनता विविध तोड़ कर दिखा
नयी गति का उपक्रम अब
बहुत पुरातन की छाया में
मानवता ने दुःख पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरू बढ़ पाया है।[6]''(बरगद की छाया के भीतर)

कवि अपने प्रियतमा के प्रेम और विश्वास को गीतों के रूप में गुनगुनाते हैं ''मैं जब कभी अकेला बिल्कुल हो जाता हूँ '' कविता की पंक्तियॉ देखें तोः–

बहुत दिनों के बाद तुम्हारी याद आज मुझे आई है–
एक मित्र हैं
अभी–अभी बस व्याह हुआ है
अपनी परिणीता का फोटो दिखा रहे थे
दिखा रहे थे, बता रहे थे
आज तुम्हारी याद मुझे आई है
देख गया इतिहास कि जब से एक सूत्र में हम दोनों हैं।''[7]

डॉ0 मन्तदन्त शर्मा त्रिलोचन की कविताओं पर लिखते हैं '' उनकी अपनी विषय विविधता में जीवन और जगत समाहित है। कवि की कविताओं में स्वानुभूत–जीवन की मार्मिक अभिव्यंजना है।[8]''

त्रिलोचन की ग्रामीण लड़की चम्पा, भैसों को चराती है'' चम्पा काले अक्षर नहीं चीन्हती 'में'':–

''चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है, गायें भैंसे रखता है
चम्पा चौपायों को ले कर
चरवाही करने जाती है।''[9]

वहीं इस दृष्टि में वे ''आदमी'' और जानवर'' के स्वयं सिद्ध सम्बन्ध को स्पष्ट करते हैंः–

''जो कुछ उन्हें प्यार में खिलाते हैं खाती है।
फिर इन गायों को दुहता है
दुहने वाला बछड़ों के लिए भी छोड़ता है।
आदमी और जानवर एक दूसरे के हैं।
एक दूसरे के लिए।[10]''

त्रिलोचन की नजर में पक्षियों के नष्ट होने की चिंता हैः– ''वनस्पतियों के सहारे जीने वाले
जीव जंतु भी जीव–रहित हो गये
गीध आदि जो वायु मंडल को
स्वच्छ रखा करते थे
नष्ट होते होते नष्ट हो चले
इस दुर्घट योग से दुनिया कैसे बचे।[11]''
(दुनिया कैसे बचे)

त्रिलोचन को शरद का नीला आकाश खूब पसन्द है। चाँद तारों से भरा आकाश उन्हें। 'धरती' से कम प्रिय नहीं है। शरद के संदर्भ में कावे की अनुभूति देखें 'सबका अपना आकाश' कविता कवि में :–

''भरी है पारिजात की डाल/नई कलियों से मालामाल कर रही बेला को संकेत/जगत में जीवन ह्रास हुलास चोंच में ग्रीव से ग्रीव/मिलाकर होकर सुखी अतीव छोड़कर छाया युगल कपोल/उड़ चले लिए हुए विश्वास।[12]''

कवि का प्रकृति चित्रण के सन्दर्भ में डॉ सन्तदत शर्मा का विचार देखें ''सच पूछिये तो त्रिलोचन मानव संघर्ष के जितने महान् एवं यशस्वी कवि हैं उतने ही प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य के भी हैं। यही कारण है कि प्रकृति सुन्दरी की भाँति–भाँति की लीलाएँ एवं सौन्दर्य उनकी प्रकृति चित्रण संबन्धी कविताओं में चित्रित हुई हैं।[13]''

त्रिलोचन का किसान सोंधी माटी की महक का बोध ही नहीं करवाता, वह अन्तमय कोष, प्राणमय कोष का रखवाला है। त्रिलोचन के कृषि–भाव का दर्शन देखें तो.....। अगर न हो हरियाली कहाँ दिखा सकता हूँ।[14]''
(ध्वनि ग्राहक)

मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में ''वे किसान–जीवन की करूण के– कहानी नहीं कहते, उसके स्वाभिमान की रक्षा को महत्व देते हैं। उनका किसान अभाव में जीता है, लेकिन अभाव से दबता नहीं। उनकी कविता में किसान–जीवन का यथार्थ सच्चे और खरे रूप में है, न वह भावुकता के उच्छवास में डूबा है न विचारधारा के आग्रह से ढका है। ऐसा यथार्थवाद अमीर पाठकों को बेचैन करता है।[15]''

कवि भारतीय परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ डालना चाहते हैंः–

''उठो गरजकर देशवासियों,
आज देश का मान बचाओं
अपनी जय–जयकार वायु की,
आज तुम्हारी यह जय–यात्रा (लहरों में फैलाते जाओ)
देश–देश की गति बनेगी
तुम स्वतन्त्रता के सैनिक हो
बोलो–
मानवता स्वतन्त्र हो। [16]'' (भूखे भेड़िये)

''गुलाब और बुलबुल में भूख की वेदना चित्रित है
''विस्तरा है न चारपाई है,
कल अँधेरे में जिसने सर काटा, नाम मत लो हमारा भाई है।
ठोकरें दर–ब दर की थी हम थे,
कम नहीं हमने मुँहकी खाई है।''[17]
(विस्तरा है न चारपाई है)

अमरेन्द्र कुमार सिंह के शब्दों में ''इस सच्चाई से मानवता काँप उठती है। क्या कर रहे हैं लोग? किधर जा रहा है हमारा समाज?कहाँ है हमारा पारिवारिक अपनत्व? विवेकहीनता के दलदल में अट्टहास करती दानवता को इतने सहज रूप में कह देना त्रिलोचन की विशेषता है।''[18]

त्रिलोचन भारतीय हैं वे भारतीय धर्म को कट्टरता निर्दयता, जातीयता, पाखंड आदि से दूर रखना चाहते हैः–

''धर्म–विनिर्मित अंधकार से लड़ते–लड़ते
आगामी मनुष्य, तुम तक मेरे स्वर बढ़ते।''[19] (पश्यंति)

कवि देश, विदेश, व्यक्ति समाज और राष्ट्र के लिए आत्मीयता और मानवतावाद की दृढ़ता के पक्षधर हैंः–

''किसी देश में मानवता को मुक्ति यदि मिली
तो मैंने जीवन पाया, जी की कली खिली।''[20]
(मुक्ति का गायक)

त्रिलोचन के सन्दर्भ में रेवतीरमण अपना विचार देते हैं
''ईमानदारी कवि का जीवन–दर्शन है। सामाजिक लक्ष्य के प्रति कवि के उन्मुख होने के पीछे उसकी प्रबल नैतिक सच्चाई है।''[21]

धरती के कवि त्रिलोचन अपनी पहली कविता में प्रिया से कर्मपथ का आह्वान करते हैंः–

''मुझे जगत जीवन का प्रेमी बना रहा है प्यार तुम्हारा
मेरी दुर्बलता को हरकर नई शक्ति नव साहस भरकर
तुमने फिर उत्साह दिलाया कर्मक्षेत्र में बढ़ूँ संभलकर
तब से मैं अविरत बढ़ता हूँ बल देता है प्यार तुम्हारा।''[22](धरती)

रेवतीरमण के अनुसार ''प्रेमिका–पानी छायायुग में कवियों को कर्मण्य बनाती थी तो त्रिलोचन के साथ भी यही होता है। यह कवि के हृदय में जीवन की लय जगाती है, कवि को धरती का अनुरागी बनने और निर्मय संघर्ष पथ पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। उसकी ही प्रेरणा से कवि जीवन के स्वर सुन पाता है, जीवन के गान लिख पाता है। उसका युग–जीवन का अनुयायी बनना भी प्रिया–प्रेरण का प्रतिफल है। ''23 त्रिलोचन के लेखन के केन्द्र में मनुष्य हैः–

कवि कहते हैं, दुख बना हो तो अहसास कर। अट्टहास में मन को गड़नेवाले दर्द डूब जाते हैंः–

''ढली रात, सुनसान गली है और अकेला
मैं चलता हूँ नीद भरा स्वर पहरेवाला
कहता है, जागते रहो.....
नभ से हैं ऊँचे–ऊँचे भवनों का घेरा
मन को मोड़ा, देखा सिर पर सभा जुड़ी है
तारों की, सन्नाटर है.....[25] (दिगन्त)

त्रिलोचन की सॉनेट रचना पर ''त्रिलोचन सॉनेट–रचना में पूरा वाक्य लिखते हैं। उनके वाक्य एक चरण से दूसरे चरण में फिसलते हुए चलते हैं, जैसे एक–दूसरे का हाथ पकड़कर चल रहे हों।''[26]

कवि के भोरई केवट, नगई, महरा प्रश्न करते हैं '' श्रम की प्रतिष्ठा, श्रमिकों के सम्मान, शोषण मुक्त 'सुखमय' दिन पर।

त्रिलोचन श्रम के मूल्य को स्थापित करते हैं

''भीतर की प्राणवायु सब बाहर निकाल कर
एक बात उसने कही
जीवन की पीड़ा भरी
बाबू, मंहगी के मारे किसी तरह अब तो
और नहीं जिया जाता
और कब तक चलेगी लड़ाई यह?
(मोरई केवट के घर)[27]

देख लेता हूँ सबहोशाम की में रंगीनी
रंग मेरे ही लिए सुबह नहीं, शाम नहीं,
और भी नाम हैं दुनिया में मगर मेरे लिए
नाम है एक तेरा और कोई नाम नहीं। [24]
(गुलाब और बुलबुल)

रेवती रमण के शब्दों में ''नगई महरा'' ग्राम समाज की एक सच्ची तस्वीर है। यह यथार्थवादी कविता–कला की एक बड़ी उपलब्धि है।[28]''

त्रिलोचन भाषा से मनुष्य के हृदय को टोते हैः–

''भाषा की लहरों में जीवन की हलचल है।
ध्वनि में क्रिया भरी है और क्रिया में बल है।''[29]

वे अन्तिम सॉस तक कवि लेखक बने रहे। ''शब्दों से मेरा संबन्ध छूट जायेगा'' की पंक्तियॉ देखेंः–

''मुझे अपने मरने का
थोड़ा भी दुख नहीं
मेरे मर जाने पर
शब्दों से मेरा संबंध
छूट जायेगा।30''

और त्रिलोचन सम्पूर्ण विश्व की मानवता चाहते हैंः–

''केवल भारत नहीं विश्व का मानव जागे
फूले, फले, बढ़े, अपने मन का सुख पाए।''[31]

कवि त्रिलोचन जीवन संघर्ष, यातना और अंदरूनी छटपटाहट के साथ गत्यात्मक होकर सामाजिक सत्य की अभिव्यक्ति के लिए सृजनशील हो उठे हैं।

उपसंहार–

हिन्दी के प्रगतिशील कवियों में त्रिलोचन अपनी काव्य रचना द्वारा जीवन के विविध पक्षों को चित्रित करते हैं, वे सामाजिक स्थितियों पर कविता की भूमिका का प्रश्न करते हैं कवितायें जो अनुभूति, कल्पना, विचार और अपनों को साकाार करती हैं, त्रिलोचन की कविताओं में भावुकता तो है पर न झूठा आशावाद, न काल्पनिक संघर्षों के अमूर्त चित्र हैं, न मारों–काटो की ललकार है फिर भी जनशक्ति में विश्वास है, संग्राम के लिए आह्वान है, मुक्ति आंदोलन को गीत है और सोच–समझकर चलने की चेतना है। कवि की वैयक्तिक संवेदना निवैक्तिक होकर आम आदमी से जुड़कर सामाजिक धरातल का आधार पाती है। त्रिलोचन की कवितायें भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व, स्वतंत्रता के बाद और मोहभंग के चरण में आते हैं। पराधीन भारत की जकड़न, क्रूर शासकों की अमानवीय यातनायें, ग्राम्य जीवन का चित्रण अपना क्रान्तिकारी स्वरूप लेकर उपस्थित हुई है। चम्पा, नगई, भोरई केवट भारतीय है। सामाजिक विषमता का प्रधान कारण पूँजीवादी सभ्यता है। त्रिलोचन इसके मूल नष्ट के आकांक्षी हैं। वे मजदूर, किसान और उपेक्षित वर्ग को उनकी शक्ति का बोध कराते हुए क्रान्ति द्वारा नयी संस्कृति, नये मूल्य, नव निर्माण चाहते हैं। सहज, सरल व्यक्तित्व वाले त्रिलोचन की रचनाओं के केन्द्र में जनताकी वेदना है। कवि शब्दों को गढ़ते हैं जो अपनी सरलता, मधुरता, स्पष्टता के साथ अभूतपूर्व हो उठती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. सं0 डॉ0 गोविन्द प्रसाद 'त्रिलोचन के बारे मे 'समीक्षा निबन्ध' वाणी प्रकाशन,
2. वही पृ0 118
3. वही पृ0 12
4. त्रिलोचन 'धरती' नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद 1945 पृ0 15
5. खेतीरमण 'त्रिलोचन' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2011, पृ0 23
6. त्रिलोचन 'धरती' नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1945 पृ0 27
7. वही पृ0 52

8. शर्मा डॉ0 सन्तदन्त 'प्रगतिशील कविता और त्रिलोचन' सत्यम पब्लिकेशन हाऊस नई दिल्ली, 2013 पृ0 40
9. त्रिलोचन 'धरती' नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1945 पृ0 88
10 त्रिलोचन 'जीने की कला,' किताबघर प्रकाशन नई दिल्ली पृ0 13
11. वही पृ0 13
12. त्रिलोचन 'सबका अपना आकाश' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987 पृ0 15
13. शर्मा डॉ0 सन्तदन्त 'प्रगतिशील कविता और त्रिलोचन' सत्यम पब्लिशिंग, हाऊस, नई दिल्ली 2013 पृ0 70
14. त्रिलोचन 'दिगंत' जगत शंखधर, वाराणसी, 1957, पृ0 24
15. सं0 प्रसाद डॉ0 गोविन्द 'त्रिलोचन के बारे में, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नई दिल्ली 1994 पृ0 150
16. त्रिलोचन 'तुम्हें सौंपता हूँ' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 1985 पृ0 127
17. त्रिलोचन, 'गुलाब और बुलबुल' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1956 पृ0 25
18. सिंह डॉ0 अमरेन्द्र कुमार, 'त्रिलोचन के काव्य में समसामयिक सामाजिक राजनीतिक सन्दर्भ, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 2016, पृ0 161
19. त्रिलोचन 'दिगन्त', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1957 पृ0 17
20 वही पृ0 64
21. रेवतीरमण 'त्रिलोचन' साहित्य अकादमी नई दिल्ली 2011 पृ0 19
22. त्रिलोचन 'धरती' नीलाम प्रकाशन इलाहाबाद 1945, पृ0 39
23. खेतीरमण 'त्रिलोचन' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली 2011 पृ0 35
24. त्रिलोचन, 'गुलाब और बुलबुल' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1956, पृ0 61
25. त्रिलोचन, 'दिगन्त', प्रो0 जगत शंखधर, वाराणसी, 1957 पृ0 42
26. सं0 ध्रुव शुक्ल 'त्रिलोचन संचयिता' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2002 पृ0 26
27. त्रिलोचन 'धरती,' नीलाम प्रकाशन, इलाहाबाद, 1945 पृ0 96
28. रेवतीरमण, 'त्रिलोचन' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2011 पृ0 31
29. त्रिलोचन, 'दिगंत' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 1957, पृ0 63
30. त्रिलोचन, 'मेरा घर', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2002 पृ0 29।
31. त्रिलोचन, 'दिगंत', राजकमल प्रकाशन, दिल्ली 2002, पृ0 57